दैनिक जागरण तरंग

मैंने काफी कुछ सीखा

खबर है कि

नरगिस फखरी के पास 'हाउसफुल थ्री' और 'अजहरुद्दीन' फिल्में हैं। उनका कहना है कि वे मेहनत से काम करती हैं और अपनी हर फिल्म से कुछ न कुछ सीखती हैं...

फिल्म 'रॉकस्टार' से नरगिस फखरी रातोरात चर्चित हो गई थी। उसके बाद उन्होंने 'मद्रास कैफे' और 'मै तेरा हीरो' जैसी सफल फिल्में दी। इसके बावजूद वे अब भी हिंदी सिनेमा में अपनी पकड़ नहीं जमा पाई हैं। वे इसके लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। उनकी अगली फिल्म 'हाउस फुल थ्री' है। साथ ही 'अजहरुद्दीन' में भी नजर आएगी। वे कहती हैं, 'मुझे नहीं पता कि फिल्म इंडस्ट्री मेरे बारे में क्या सोचती है। मैं सिर्फ अपना काम मेहनत से करने में विश्वास रखती हूं। मैंने जब से मुंबई में कदम रखा है, तब से काम कर रही हूं। मेरे लिए यही काफी है। मै हर फिल्म में अपने काम को निखारने की कोशिश कर रही हूं। मैंने कई अच्छे प्रोजेक्ट पर काम किया है। मै अब भी कई अच्छे प्रोजेक्ट पर काम कर रही हूं। 'हाउस फुल थ्री' की टीम के साथ काम करना मेरा सपना था। वह अब पूरा हो रहा है। यही मोहम्मद अजहरुद्दीन की बायोपिक भी दिलचस्प प्रोजेक्ट है। मेरे लिए यह मुश्किल फिल्म है। यह फिल्म मोहम्मद अजहरुद्दीन के वास्तविक अनुभवों पर आधारित है। मै अभी अपने किरदार और कहानी को को समझने की कोशिश कर रही हूं। मुझे इस फिल्म के लिए अपनी डायलॉग डिलीवरी पर काम कर रहा हूं। मेरे लिए यह बेहद जरूरी है। मै एक अमेरिकन फिल्म में भी काम कर रही हूं। मै हर तरह के काम और किरदार का अनुभव करना चाहती हूं। हमें सिर्फ एक ही जीवन मिलता है। मै अपने जीवन में हर तरह के किरदार निभाना चाहती हूं।' अपने अब तक के अनुभव पर वे कहती हैं, 'हिंदी सिनेमा ने मुझे काफी कुछ सिखाया। मैंने यहां मजबूत और नैतिकता के आधार पर खड़े रहना सीखा है। मै खुद पर विश्वास करती हूं। मुझे जो सही लगता है, वहीं करती हूं। मुझे इससे खुशी मिलती है।'

टिपिकल रोल अब नहीं : करीना कपूर खान

करीना कपूर खान इन दिनों आर. बाल्की की फिल्म 'की ऐंड का' की शूटिंग में व्यस्त हैं। इससे पहले उन्होंने अभिषेक चौबे की 'उड़ता पंजाब' की शूटिंग पूरी की थी। करीना के करियर में ऐसे अवसर कम ही आए हैं, जब उन्होंने कथित गैर-कमर्शियल फिल्मकारों के संग काम किया हो। करीना आर. बाल्की के बारे में कहती हैं, 'वे एक प्रतिभावान निर्देशक हैं। मै ऐसे निर्देशकों के साथ काम करना चाहती हूं, जिनके साथ पहले काम नहीं किया है। आर. बाल्की व अभिषेक चौबे उनमें से एक हैं। मैंने प्रस्ताव मिलते ही तुरंत दोनों की फिल्म के लिए हां कर दी थी। मै अब रेगुलर व टिपिकल रोल से बाहर आ रही हूं। मै अब अलग तरह के किरदार निभाना चाहती हूं। 'की ऐंड का' में भी मेरा वैसा ही किरदार है। इस फिल्म में बाल्की ने मेरा किरदार रॉ और रियल रखा है। वे किरदार को बखूबी फ्रेम करते हैं। शादी और रिश्तों पर कई तरह की फिल्में बनाई गई हैं। यह फिल्म उन सबसे अलग है। अच्छी कहानी होने पर किरदार को ऊंचाइयां प्रदान करने में मदद मिलती है।' करीना का इरादा भले नेक हो, मगर 'बदर्स' में उनके आइटम नंबर की आलोचना भी हुई है।

करीना कपूर

मेरा समय आ गया है : आयुष्मान खुराना

'दम लगा के हईशा' से आयुष्मान खुराना को काफी फायदा हुआ है। उनकी गिनती कामयाब एक्टरों में होने लगी है। खबर तो यह भी है कि तिग्मांशु धूलिया ने अपनी अगली फिल्म के लिए इमरान खान को रिप्लेस कर आयुष्मान खुराना को कास्ट कर लिया है। आयुष्मान कहते हैं, 'विकी डोनर' से मेरे करियर को काफी फायदा हुआ। नए मौके मिले। हालांकि बीच में कुछ फिल्में ढीली गईं थीं। अब 'दम लगा के हईशा' ने मेरे पोटेंशियल की पुनर्पुष्टि की। तिग्मांशु की फिल्म बड़ी रोचक लग रही है। यह बड़ा मजेदार अनुभव हो सकता है कि उत्तराखंडी युवक प्ले करने के बाद अब एक पंजाबी युवक ठेठ यूपी का युवक प्ले करे। मैंने अब तक के अनुभव से यही सीखा है कि सफलता बहुत ही खराब शिक्षक है। असफलता सिखाती है। मैंने अपनी जिंदगी में रिजेक्शन ही रिजेक्शन झेले हैं। इसलिए बीच की दो फिल्मों के न चलने से ज्यादा निराशा नहीं हुई है। मेरे दोस्त पुराने ही हैं। नए दोस्त नहीं के बराबर हैं। वे मुझे जमीन पर रखते हैं। शुजीत सरकार और आदित्य चोपड़ा मेरे मेंटोर हैं। जॉन अब्राहम को मैं दोस्त कह सकता हूं। वहीं विभु काफी शांत स्वभाव के दोस्त हैं।'

अमित कर्ण

आयुष्मान खुराना

नरगिस फखरी

बातचीत

अरफी लांबा

मैसेज व मनोरंजन का भरपूर डोज है

'सिंह इज ब्लिंग' में अरफी लांबा अक्षय कुमार के गहरे दोस्त की भूमिका निभा रहे हैं। इस फिल्म में मैसेज भी है और मनोरंजन भी...

पिछले साल युवाओं के सिस्टम के खिलाफ आक्रोश पर दो फिल्में आई थीं। एक 'उंगली', दूसरी 'फगली'। 'फगली' से पंजाब के अरफी लांबा ने करियर का आगाज किया। फिल्म को मिली-जुली प्रतिक्रियाएं मिलीं और अरफी को अगली फिल्म का जरा लंबा इंतजार करना पड़ा। अब जाकर वे 'सिंह इज ब्लिंग' में आ रहे हैं। वे अक्षय कुमार के किरदार रफ्तार सिंह के गहरे दोस्त की भूमिका में हैं।

वे बताते हैं, 'इस फिल्म में मेरा चयन ऑडिशन के जरिए हुआ। प्रभु देवा सर को मेरा ऑडिशन अच्छा लगा था तो उन्होंने इस फिल्म में मुझे रफ्तार सिंह के दोस्त का रोल ऑफर किया। फिल्म करते वक्त बहुत मजा आया। मै पंजाबी हूं और अक्षय सर भी। ऊपर से वे जब सेट पर होते हैं तो माहौल में भरपूर ऊर्जा होती है। शूट से फुर्सत पाते ही वे सह कलाकारों व यूनिट वालों के संग प्रैंक करने लग जाते हैं। मै भी उसका शिकार हुआ। एक सीन में रफ्तार सिंह के संग मुझे एक कमरे में जाना था। कमरे में घुसते ही मेरे सामने कैमरे लगे होते। सीन शुरू होने से पहले अक्षय सर को शरारत सूझी। उन्होंने मुझे छत की तरफ देखने को कहा। मै ऊपर देखने लगा तो उन्होंने शराब में भीगी ईयर बड मेरी नाक में घुसेड़ दी। मुझे ताबड़तोड़ छींक आने लगी। तभी प्रभु सर ने एक्शन बोल दिया। अक्षय सर ने हंसते हुए मुझे एक नुस्खा बताया, जिसे इस्तेमाल कर मैंने सीन पूरा किया।'

अरफी लांबा को प्रभु देवा की फिल्में बेहद पसंद हैं। वे कहते हैं, 'उनकी फिल्मों में लॉजिक और मनोरंजन दोनों का उचित मिश्रण होता है। 'राउडी राठौड़' तो मेरी पसंदीदा फिल्मों में से एक है। उनकी फिल्मों की सबसे बड़ी खासियत लोकेल विशेष की समृद्ध परंपरा की सतरंगी छटा का चित्रण है। 'सिंह इज ब्लिंग' में पंजाब की माटी, युवाओं की मानसिकता और वहां के माहौल को बखूबी पर्दे पर उतारा है।'

अरफी कहते हैं, 'रफ्तार सिंह के जरिए जिंदगी में फोकस न रखने वालों की मनोदशा बयां की गई है। दिखाया गया है कि जब दिशाहीन को दिशा दिख जाए तो वह काफी कुछ अचीव कर सकता है। फिल्म हंसते-हंसाते एक सार्थक संदेश दे जाती है। वह यह कि अपने परिजनों से अहम कोई नहीं। प्यार से बड़ी कोई इबादत नहीं। स्वाभिमान के लिए जान तक लड़ा देना व साथ ही लड़कियां अपनी सुरक्षा के लिए किसी का मोहताज न रहें। अरफी लांबा बताते हैं, 'मुझे यकीन है कि यह फिल्म सुपरहिट होगी। मैंने इसमें काफी कॉमेडी की है। लोगों को मेरे किरदार से प्यार हो जाएगा।'

अरफी के अनुसार, 'यह फिल्म एक नजीर है कि मुझ जैसे आउटसाइडर के लिए भी इंडस्ट्री काफी ओपन है। वह सभी को फेयर चांस प्रदान करती है। दो साल पहले कोई नहीं जानता था मुझे। मै पंजाब के मोगा इलाके से हूं। पटियाला से इंजीनियरिंग की और दिल्ली आकर जॉब करने लगा। दिल्ली आने से पहले मै बड़ा शर्मीला व अपने में खोया हुआ शख्स था। दिल्ली में मुझे मॉडलिंग के असाइनमेंट मिलने लगे। फिर तय कर लिया कि मुझे इसी फील्ड में करियर बनाना है। आज मेरी तपस्या सफल हो चुकी है। मै लोकप्रिय एक्टर बनना चाहता था। 'सिंह इज ब्लिंग' उस दिशा में मुझे तेजी से आगे ले जाने वाला है।'

अमित कर्ण

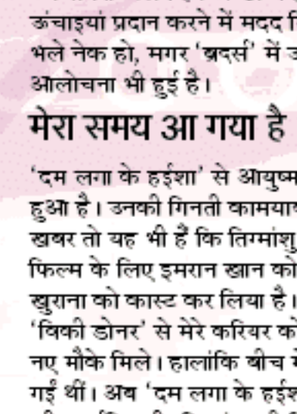

सौरभ शुक्ला

हैप्पी बर्थडे

28 सितंबर को रणबीर कपूर का 34वां जन्मदिन है। इस अवसर पर सौरभ शुक्ला बता रहे हैं उनके बारे में...

इस तरह रणबीर लेते हैं स्टारडम का अनुभव

रणबीर कपूर

रणबीर बड़े ही शांत, सौम्य और संयत इंसान हैं। पब्लिक प्लेटफॉर्म पर अनावश्यक आक्रामकता जाहिर नहीं करते। अपने सीनियर और जूनियर कोस्टार के साथ सलीके से पेश आते हैं। 28 सितंबर को उनका 34वां जन्मदिन है। 'बर्फी' में उनके कोस्टार रहे सौरभ शुक्ला उनके व्यक्तित्व के कायल हैं। उन्होंने बताया :

'बर्फी के दौरान निर्देशक अनुराग बसु और रणबीर ही मुझे एक्टिंग में वापस लाए। दरअसल, उससे पहले मेरा एक्टिंग से मन कुछ उचट-सा गया था। मुझे अभिनय में बहुत मजा नहीं आ रहा था। लिहाजा जब अनुराग बतौर निर्देशक और रणबीर बतौर कोएक्टर मिले तो एक्टिंग का उत्साह लौटा। रणबीर से मेरी पहली मुलाकात 'बर्फी' के सेट पर कोलकाता में हुई थी। मै उनके साथ पहली बार काम करने जा रहा था। सेट पर रणबीर आए, तो उन्होंने मुझे खुद हैलो कहा। फिर बोले, सर मै आपके अभिनय का मुरीद हूं। मैंने उनका शुक्रिया अदा किया। यहां से बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ। पांच मिनट के बाद हमारे बीच उम्र का फासला जैसे गायब हो गया था। हम दोस्त बन गए थे।

रणबीर युवा हैं। उनमें उमंग और उत्साह है। एक्टिंग में डायलॉग से भावों को व्यक्त किया जाता है, पर जब डायलॉग बोलने को न हों तो वह एक्टिंग की पराकाष्ठा होती है। उनके साथ फिल्म में मेरे कई सीन थे। उनके डायलॉग नहीं थे। हम दोनों कुछ न कुछ इंप्रोवाइज करते थे। रणबीर को सिनेमाई बारीकियों की गहरी समझ भी है। उन्होंने उम्दा साहित्य पढ़ रखा है। बेहतरीन फिल्में देख रखी हैं। उनमें ढेरों क्वालिटी हैं। हैंडसम तो हैं ही। हंसमुख और मेलजोल वाला स्वभाव है। कहना चाहूंगा कि वह सर्वगुण संपन्न आदर्श इंसान हैं।

फिल्म से जुड़ा एक कमाल का वाकया सुनाता हूं। अनुराग ने 'बर्फी' की कहानी मुझे सुनाई थी। मुझे उसका मूल समझ में आया, लेकिन कहानी जटिल लगी। शूटिंग के समय मै डरा हुआ था। सीन को पकड़कर अभिनय करता था। बाकी मैंने अनुराग पर छोड़ दिया। मैंने देखा रणबीर बेहतरीन अभिनय कर रहे थे। मुझे लगा कि वह फिल्म के हीरो हैं, उन्हें कहानी पता होगी। एक दिन शॉट के बाद मेरी परेशानी सुनकर रणबीर ने कहा, आपको एक कमाल की बात बताता हूं, मुझे भी कहानी नहीं मालूम। उसके बाद हम कलाकारों का ग्रुप बन गया। उसमें प्रियंका चोपड़ा और इलियाना डिक्रूज भी थीं। फिर पता चला कि असल कहानी किसी को पता नहीं थी। रणबीर बहुत चुलबुले हैं। रणबीर से एक दिन मैंने कहा कि तुम स्टार की तरह बर्ताव नहीं करते हो। सबसे घुलमिल कर रहते हो। रणबीर बोले, नहीं-नहीं मैं स्टार की तरह रहता हूं। मैंने अपना स्टाफ रखा हुआ है। उन्हें सिखा रखा है। मैंने पूछा, क्या सिखा रखा है? उन्होंने अपने सहायक को बुलाया और कहा, तैयार रहना। फिर शॉट शुरू हुआ। जैसे ही शॉट खत्म हुआ, उनका स्टाफ 'हीरा है हीरा' के नारे लगाने लगे। रणबीर मुझसे बोले, स्टारडम फील करने के लिए मैंने उन्हें यह सिखा रखा है। वाकई रणबीर नायाब हीरा है। उसके बाद हमने 'जग्गा जासूस' में काम किया है। उसके लिए हमने साउथ अफ्रीका में शूटिंग की। उनके जन्मदिन पर मैं यही शुभकामना दूंगा कि वह दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की करें। वह जैसे हैं, वैसे ही रहें। उन्हें कोई चीज छू न पाए, क्योंकि वह अपने आप में परफेक्ट हैं।'

प्रस्तुति : स्मिता श्रीवास्तव